रैदास

9 पद्य खंड

पद

-रैदास

पद-सार

रैदास संत प्रकृति के कवि हैं। उनके पद किसी सर्वगुण संपन्न और पूर्ण सामर्थ्यवान शक्ति के अस्तित्व को स्वीकारते हैं मगर उसे अपने हृदय में विद्यमान मानते हैं न कि कहीं बाहर। वे उस निराकार तक पहुँचने का अथवा उसका कृपापात्र बनने का एक ही उपाय सुझाते हैं — उसके प्रति भक्ति, उसपर भरोसा।

इस पाठ में शामिल पहले पद में कवि ने अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना की है। वे स्वीकार करते हैं कि उनका प्रभु चंदन है तो वे स्वयं पानी हैं। इसीलिए उनके अंग-अंग में उसकी गंध समाई हुई है। उनका प्रभु वर्षा से भरा घना बादल है तो वे स्वयं मोर हैं। वे उसकी ओर ठीक उसी तरह निहार रहे हैं जैसे चकोर बादलों को निहारता है। उनका प्रभु दीपकहै तो वे स्वयं वह बाती हैं जो उससे हासिल प्रकाश के सहारे दिन-रात जल रही है। उनका प्रभु यदि मोती है तो वे वह धागा हैं जिसमें वह मोती पिरोया हुआ है। उनका यह मेल सोने में सुहागे की तरह है। उनका प्रभु स्वामी है तो वे उसके दास हैं और वे एक दास की भाँति पूरे समर्पण भाव से, उनकी भक्ति में तल्लीन हैं। रैदास के प्रभु कहीं किसी मंदिर या मसजिद में नहीं विराजते वरन उनके हृदय में सदा विद्यमान रहते हैं।

दूसरे पद में भगवान की उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन है। रैदास कहते हैं कि उनका भगवान गरीबों का संरक्षक है, उनका उद्धार करनेवाला है। वे उससे अनुनय करते हैं कि वह औरों की तरह उनके सिर पर भी आशीर्वाद स्वरूप हाथ रखे। जिस व्यक्ति से सब इसलिए बचते हैं कि कहीं उसकी छूत उन्हें भी न लग जाए, उसे छूने से वे स्वयं अपवित्र न हो जाएँ, रैदास का ईश्वर ऐसे अस्पृश्य को भी गले लगाता है। वह नीच को भी ऊँचा बना देता है। उसने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसों को भी तारा है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर Question-Answers from Textbook

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

क. पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीज़ों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर पहले पद में भगवान और भक्त की तुलना निम्नलिखित वस्तुओं से की गई है—

भगवान की	**भक्त की**
चंदन से	पानी से
घन, बादल से	मोर से
चाँद से	चकोर से
दीपक से	बाती से
मोती से	धागे से
सोने से	सुहागे से

ख. पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे— पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

उत्तर अन्य तुकांत शब्द हैं—

मोरा	-	चकोरा	बाती	-	राती
धागा	-	सुहागा	दासा	-	रैदासा

ग. पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए—

उदाहरण : दीपक - बाती

उत्तर

चंदन	-	पानी	घन	-	मोर
मोती	-	धागा	सोना	-	सुहागा

घ. दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' अपने प्रभु को कहा है। गरीब निवाजु का अर्थ है- गरीब पर कृपा करने वाला। रैदास का प्रभु दीन-हीन पर कृपा करके उसे उच्च स्थान देता है। उदाहरण के लिए रैदास पर प्रभु की कृपा हुई और गरीब रैदास एक सम्मानित संत बन गए।

ङ. दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर इस पंक्ति का आशय है— जिसे सारा संसार अछूत, दलित या पतित मानता है, ऐसे व्यक्ति को प्रभु अपना लेता है, उसपर दया करता है और उसकी पीड़ा को हर लेता है।

च. रैदास ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

उत्तर रैदास ने अपने स्वामी को गरीब निवाजु, गुसईया, लाल गोबिंदु, हरिजीउ और प्रभु नामों से पुकारा है।